DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-2 ,UNIT-9,
ENVIRONMENTAL ISSUES:CROWDING
LECTURE-82

जनसंकुलन (crowding)

जनसंकुलन से तात्पर्य व्यक्ति में एक ऐसी मनोवैज्ञानिक स्थिति होती है जिसमे किसी विशेष स्थान में व्यक्तियों की दी गयी संख्याओं के प्रत्यक्षण से होता है |परिस्थिति में वह दो चार व्यक्तियों के होने पर भी व्यक्ति अधिक जनसंकुलन का अनुभव कर सकता है या फिर एक हज़ार व्यक्ति के बीच में भी होने पर जनसंकुलन का अनुभव वह नहीं कर सकता है | जनसंकुलन एक तरह का नकारात्मक मनोवैज्ञानिक अनुक्रिया है |इससे व्यक्ति का कार्य निष्पादन ,अंतवैर्यक्तिक संबंध तथा स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित होता है |

मनोवैज्ञानिको द्वारा किये गए अध्ययनों से यह पता चला है की जनसंकुलन का भाव व्यक्ति में तब उपजता है जब वह अपने भीतर उत्तेजन महसूस करता है और इस उत्तेजन का कारण स्थानगत प्रतिबन्ध को मानता है | इस तथ्य की संपुष्टि वर्केल तथा teddal (1976) के अध्ययन में हुआ है |इस तथ्य से यह पता चलता है की जनसंकुलन का भाव का सम्बन्ध व्यक्तियों के घनत्व से सीधा है |मनोवैज्ञानिको द्वारा ऐसे घनत्व के दो मुख्य प्रकार बतलाये गए है – सामाजिक घनत्व (social density) तथा स्थानगत घनत्व (spatial density) | जैसे-जैसे किसी विशेष स्थान पर व्यक्तियों की संख्या में बढ़ोतरी होती है,सामाजिक घनत्व वैसे–वैसे बढ़ता है | स्थानगत घनत्व तब बढ़ता है जब व्यक्तियों की दी गयी संख्या के लिए उपलब्ध स्थान में कमी आने लगती है |सामाजिक तथा स्थानगत घनत्व अधिक होने से विभिन्न तरह के व्यवहारों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता पाया गया है |जैसे-रॉस तथा उनके सहयोगियों ने अपने अध्ययन में पाया है की इस तरह के घनत्व में बढ़ोतरी होने से महिलाओं की अपेक्षा पुरुषो में नकारात्मक भाव अधिक उत्पन्न होते पाया है |इभान्स (1979)ने ऐसे घनत्व में बढ़ोतरी होने से दैहिक उत्तेजन अधिक होते पाया है |पावलस तथा उनके सहयोगियों (1976) ने

अपने अध्ययन में पाया की ऐसे उच्च घनत्व में जटिल कार्यो पर व्यक्ति का निष्पादन प्रभावित हो जाता है |परन्तु साधारण कार्यो पर उनका कोई ख़ास प्रभाव नहीं पड़ता है |